MADANLAL

आप अभी कहाँ पर काम कर रहे हैं और वहाँ पर किस ढंग का काम होता है?

इस टाइम तो मैं मायापुरी में काम कर रहा हूँ। यहाँ जैसे तेल के टैंक हुए, मसाले बनाने वाली मिक्सचर मशीन ए ~~ब्वॉयलर~~ मशीन होती है जो पानी गर्म करती है, इस टाइप की मशीन यहाँ बनती है। फिर ये मशीने बाहर export करते हैं। इसमें लगभग 30-40 आदमी काम करते हैं। इसमें पहले ठीक समय पर Payment मिल जाती थी पर आज-कल 3-4 महीने से ठीक समय से Payment ही नहीं मिल रही है। बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इस बीच में तो कई लोगो ने अपना हिसाब किताब कर लिया, लेकिन हम तो अभी इसी मे है कि शायद इसकी हालत सुधर जाए। तो अभी का तो यही हिसाब-किताब है, फिर इससे पहले काम किया था मुनिरका में। वह बड़ी अच्छी कंपनी थी - steve fab gardian की washing Machine की। उनके यहाँ काफी अच्छा हिसाब-किताब था, उसके यहाँ मैंने 4-5 साल काम किया। तो फिर वहाँ से हमारी कंपनी उठकर बहादुरगढ़ चली गई। फिर बहादुर गढ़ जाना मेरे को सूट नहीं करता था इसलिए फिर वहाँ से छोड़ दिया। वहाँ से जब छोड़ा तब फिलहाल यहाँ पर Join किया। इससे पहले मैंने दिल्ली में छोटी-मोटी जगहो पर काम किया, जैसे आनन्दपर्वत में 3-4 काम किया, कीर्ति नगर में 2-3 साल काम किया। छोटी-मोटी कंपनीयों में ऐसे ही चलता रहता है जी हिसाब-किताब।

शुरुआत मैं मैंने यहाँ किया बसहीं ~~दारापुर~~ से। मेरे से बड़े दो भाई यहाँ पर रहते थे। उस time काम में ज्यादा Interested था। फिर ये बोले कि कोई काम वाम सीख लो तो काम-वाम बसही से ही Start की सीखने के लिए। 1978 ई० के आस-पास 100 रु० बसहीं में काम सिखना शुरु किया। फिर सीखते-सीखते जानकारी बढ़ती गई कि

यहाँ छोड़.के चले गए आनन्दपर्वत, वहाँ पर 700रु० में काम किया वहाँ पर चार साल काम किया। वे बनाते थे ये गाड़ि के Shelf वगैरह Starter Pin वगैरह फिर ट्रेक्टर के फिर teeth cutting...... - 4-5 साल उनका काम किया फिर वहाँ से छोड़.के कीर्त्ति नगर में काम करने लगा तो कीर्ति नगर में भी Starter, Aquaguard वगैरह बनाते थे यहाँ 3-4 साल काम किया फिर वहाँ से छोड़.के उसी में जहाँ काम सीखा था, उसी में चला गया, तब उसके यहाँ जाकर मैंने 3-4 साल काम किया। वो भी काम खैर ठीक था, लेकिन मालिक पैसा-वैसा ठीक time से देता नहीं था। फिर वहाँ से छोड़. दिया, वे बनाते थे Surgical line - electricline की चेक-चुक करने की मशीनें फिर वहाँ से छोड़ा तब जा के मुण्डका गया फिर तब जा के यहाँ अब हूँ।

प्रश्न → आपने इतनी बार जो काम बदला तो इसके पीछे क्या उद्देश्य था? पैसे या अच्छा काम करने का वातावरण?

→ सब जगह पैसे की ही बात नहीं थी, बल्कि यह था कि बढ़ि कंपनी, बढ़िया मालिक मिल जाए। इसी मकसद से - कुछ तो खैर - पैसा का भी था। यही थोड़े से पैसे भी अच्छे मिल जाए और कंपनी भी अच्छी मिल जाए। इतना घूमने के बाद मिली कहीं नहीं. मुण्डका में जाकर अच्छी कंपनी मिली वहीं जो ....

वहाँ जो 5 साल काम किया, तब वहाँ से उठा के लेकर चले गए बहादुरगढ़। अब वहाँ आना-जाना Suit नहीं करता था। फिर जो है उसको छोड़. दिया।

प्रश्न → तो क्या आपको कभी Private Limited company में काम करने का मौका मिला या नहीं?

→ ये जो मुण्डका में थी प्राइवेट लिमिटेड थी, यह भी जो है, यह भी प्राइवेट लिमिटेड ही है।

प्रश्न → Permanent नहीं है?

→ Permanent नौकरी है। यहाँ पर भी Permanent है मुण्डका

मैं भी Permanent थी बाकी जगह वैसे ही थी।

प्रश्न → आपने जो इतनी जगह काम किया तो मालिकों का रवैया कैसा रहा कुछ बताएँ?

→ मालिक वर्ग का रवैया तो बस हर जगह मजदुरवर्ग का शोषण ही रवाली जहाँ पर भी देखा जाए जहाँ पर मैंने काम किया, वहाँ मालिकों का मकसद था कि कितना ज्याद मजदुरों का शोषण हो जाए। किसी को उचित मजदुरी न मिलता अगर किसी को उचित मजदुरी नहीं मिली तो मजदुर काम क्या करेगा। तो सब जगह मे 80% ऐसे ही मालिक मिले जो मजदुरों का शोषण करे। बस मुन्डका मे थोड़ा ठीक थे नहीं तो बाकी हर जगह तो शोषण ही कि 1100 – 1500, 1600-1500 क्या इसमें गुजारा होता है आदमी का। जैसे पीछे आपने सवाल किया कि आप family क्यों नहीं रखते। अब ऐसे माहौल मे आदमी क्या family रखे जो मजदुर वर्ग का आदमी है, उसको 1500-1700 रु मिलता है इसमें तो वह खुद नहीं खा पाएगा तो family क्या रखेगा दिक्कतों के वजह से भी कुछ आदमी family को घर मे छोड़ रखा है। यहाँ तो अपना गुजारा चलाना मुश्किल होता है बच्चे-बुच्चे आदमी रख के पढ़ाए तो आदमी को खर्चा नहीं पूरा होगा। एक तो कंपनियों की ये हालत है इतनी ये गए तो और दिक्कत हो गई।

प्रश्न → अच्छा तो आपने इतने कंपनियों मे काम किया, काफी दिनों से (15 – 20 सालो) मे यहाँ तो आपका काफी मजदुरों के साथ interaction हुआ होगा तो यह बताइये कि ये कहाँ से आते है और क्यो आते है।

→ छोटी-मोटी कामो मे 4-5 लोग होते हैं 5 लोग 7 लोग उसमें कोई विशेष मजदुर नहीं थे। जैसे वहाँ भी किया तो उसमें 5-6 लड़के थे। सबलोग, कोई U.P. से ज्यादातर तो अपने U.P., Bihar से ही आते है। यहाँ वाले तो बहुत कम ही लोग है यहाँ वाले जो है उनका

तो अपना-अपना काम-धाम है। लेकिन मजदुर वर्ग के जो लोग है वे ज्यादातर U.P., Bihar से ही आते है।

प्रश्न क्यों आते है—

→ सब नौकरी के मकसद से आते है, दुसरा क्या मकसद होगा यहाँ आने पर कोई काम-धाम सीखे कोई line पकडे कोई नौकरी चाकरी अच्छी मिल जाएगी। यहाँ आने का तो सिर्फ एक ही मकसद रहता है। यहाँ तो आकर के लोगो का luck साथ दे गयी तो अच्छे निकल गये नहीं तो। अब ये लड़का जो आपके पीछे Introduction दिया था, मेरे पीछे आया था लेकिन मेरे से अच्छी इसकी salary है अच्छी कंपनी है। कुछ इसे अपना luck साथ दे गया तो कुछ। नहीं तो मेरे से ये 8 साल पीछे आया था। मेरे अंदर मे काम-धाम सीखा था लेकिन उसकी अभी 5000-6000 salary है और मेरी 2600-2700 रुपया है। भाग्य की कुछ बात है।

प्रश्न → नहीं मै पूछ रहा था कि जो लोग आते है, तो कुछ विशेष कारण रहा होगा कि घर से भगा दिए गए या खुद भाग गये, इस ढंग का मतलब Generally क्या लगता है आपको

→ कुछ लोग को जैसे पहले पढ़ाई-वढ़ाई मे Interest था आजकल कुछ लोग को Interest भी नहीं है। कुछ की मजबुरी है जैसे किसी के घर की आर्थिक स्थिति कमजोर है कुछ माँ-बाप पढ़ा नहीं पाते है इसलिए वे चले आते है। दोनो ही मजबुरी है आदमी के--- आदमी के गाँव मे मान लो आदमी का गुजारा न हो तो कुछ लोग तो अपने घर की आर्थिक स्थिति से तंग होकर चले आते है, कुछ लोग भाग के भी चले आते है जिसे पढ़ाई-वढ़ाई मे Interest नहीं होता है या घर के काम-धाम मे Interest नहीं होता है। कुछ ऐसे भी भाग के चले आते है। किसी की अपनी Personal मजबुरी होती है।

प्रश्न → आप अपने कुछ बचपन के बारे मे बताए?

→ हम 3 भाई थे 2 तो यहीं दिल्ली में Service करते थे। हम घर में रहते थे। तो हम घर में रहकर पढ़ते थे। तो Inter तक तो हमने पढ़ा। भाइयों का सहयोग रहा कि हम दो भाई कमा रहे है तो ये घर पे पढ़े घर पे पिताजी थे बुजुर्ग थे उनसे भी कोई कामधाम नहीं होता था तो उनके साथ भी खेती-बाड़ी में भी योगदान था। अपना सुबह में उठकर के जाना, थोड़ी देर खेत में हल वगैरह चलाना, फिर उसके बाद से अपना आना तो पढ़ने जाना, फिर 10 बजे पढ़ने गाँव से काफी दूर जाना पड़ता था ऐसे जैसे 10 K.m. दूर जाना पड़ता था Train जाती थी उसी Train से जाते थे, जाते थे 10 बजे फिर अपना शाम को आते थे 4 बजे फिर 4 बजे से अपना जो समय निकलता था उसे खेती-बाड़ी में लगाते थे। फिर सुबह उठते थे 6 बजे जग करके अपना 9-10 बजे तक अपना खेत का काम किये फिर 10 बजे से पढ़ने चले गए। ऐसे करके तो पढ़ाई का सिलसिला चलता रहा तो 1 से 12 तक तो पढ़े। 12 साल तो ऐसे ही पढ़ाई का चलता रहा। फिर बीच में पढ़ाई में न Interest आया तो फिर दिल्ली चले आए दिल्ली चले आए तो बीच में वही काम-धाम सीखना-सुखना किया। जैसे यहाँ पीछे में बताया था। तो इसके पहले बचपन तो खैर तंगी हालत में ही गुजरी क्योंकि पिताजी जो ने घर पे ही रहते थे हम जो तीन भाई थे छोटे-छोटे थे उस Time service किसी को भी नहीं थी सब लोग ऐसे ही थे घर की आर्थिक स्थिति तंग ही थी। जैसे-तैसे करके घर का काम-काज चल जाता था। सबसे पहले बड़ा भाई यहाँ आया उसने दूसरे वाले को बुलाया। ऐसे करके हम दिल्ली काम के ही ध्येय से आये थे। तो आये भी काम सीखे भी भाईयों का सहयोग था तो उस Time काम-धाम सीखे

ये तो था उस समय में।

प्रश्न → शादी वगैरह के बारे में।

→ फिर उसके बाद शादी हमारी 1974 में हुई। हमारे यहाँ शादी के तीन साल बाद गौना होता है। तो शादी हुई फिर 3 साल बाद 74 और 1977 में गौना हुआ फिर गौना के 77 यानी 4 साल बाद जाकर के एक बच्चा हुआ फिर 2 जो है सो अचानक 1½ साल बाद ही हो गया। फिर उसके बाद से तीसरे में अभी 7-8 साल का है मतलब अभी तक चल ही रहा है ऐसे ही तो अब तो यह ही विचार है कि लगभग बंद ही है एक की तरह से अब तो करना ही नहीं है क्योंकि हिसाब - किताब नौकरी से है ऊपर ही ब्रेक लगा देना है। फिर भी बीच में 3 डलिवर हो गया कि लड़की के चक्कर में देखते - देखते 2 लड़के ही होते गए फिर मजबुरन जो है सो चलो बंद ही करते है।

प्रश्न → अपने गाँव के बारे में कुछ बताइयें कि गाँव कैसा है यहाँ किस तरह के लोग रहते है, लोग क्या काम करते है?

→ गाँव जैसे खेती - बाड़ी होती है गेहूँ की चना की, आलू वगैरह, गल्ले की। गाँव में भैंस है गाय है अपने गाँव मे लोग खेती - बाड़ी से ही Interest रखते है और है भी ऐसे गाँव मे लोगो का खेती ही। तो जैसे हमारा गाँव तो कोई विशेष बड़ा नहीं है लेकिन यह है कि फिर भी 65 - 60 घर तो है ही अब एक में 8 से 12 परिवार है। अच्छा गाँव में कुछ लोग 30 - 40 घर ब्रह्मण है, बांकी कुछ लोग यादव है और थोड़े से हरिजन लोग है। गाँव में आपस में ही खिंचातानी चलता रहता है। कोई किसी का रास्ता बंद कर दिया आपस मे तो झगड़ा - झंझट तो होता ही रहा है। हॉलाकि पहले तो यह बात नहीं थी लेकिन

पहले तो यह बात नहीं थी लेकिन अब आजकल तो है। कोई कोई कहता है कि हम अपने रास्ते से नहीं जाने देंगे, तो वह जो अपने में नहीं जाने देता है तो दुसरा कहता है कि हम अपने में नहीं जाने देंगे। इन सब चीजो के कारण आपसी झगड़ा होता ही रहता है। आज से पहले 15 दिन पहले जब मैं गाँव गया था। एक रास्ता था Main गाँव में जाने का एक पक्ष उसको बंद कर रहा, दुसरा पक्ष कह रहा था कि सार्वजनिक रास्ता है इसे रहने दो तो फिर दोनों में आपस में काफी मार-पीट हुई फिर बीच में हमलोग भी गये छुड़ाने के चक्कर में उनसबों ने हमलोगों को भी धिसा दिया था, 2-चार, दस दिया। हमलोग भी लगा-दौर करके। और गाँव वैसी बात तो है ही है। आजकल Tension ज्यादा है। अच्छा फिर जो ये ब्राह्मण वर्ग के लोग है और उनलोगो तो कम है लेकिन जैसे ये छोटे वर्ग के लोग है इनमें आपस में ज्यादे ये है। कुछ हमारे गाँव के जो ब्राह्मण वर्ग के लोग है वो तो अच्छे Post पर है उनलोगो का विचारधारा बल्कि ठीक है। लेकिन जैसे ये निम्नवर्ग के या यादव लोग है इनके बीच में आपस में यह सब होते ही रहती है। मार-पिटाई, झगड़ा-झंझट करते है। तो पढ़ाई की Starting गाँव से हुई। गाँव में एक Primary school था। घर के पास में ही था तो वहाँ जाते थे पढ़ने के लिए। वहाँ 1 से 5 तक पढ़ा। पढ़ने में शुरु में नींव बड़ी मजबुत थी पढ़ने में तो ठीक थे। 1 से 5 तक बड़ी ही पढ़ने-पढ़ने की Setting ठीक थी। फिर उसके बाद थोड़ी ही दूर पर Middle school था, फिर वहाँ पढ़े। तो वहाँ पर भी गाँव के लड़को का जो समाज था वो ठीक ही था। तो वहाँ पर Batch अच्छे ही थे वहाँ पढ़ाई लिखाई भी

ठीक ही थी। फिर 8 के बाद जब हमलोग 10 में गये तो वह स्कूल काफी दूर पड़ता था। Train से जाना-आना पड़ता था। वहाँ जाकर समाज के लड़के भी कुछ गलत मिल गये। जैसे फिल्म-विल्म देखना हुआ, किसी दिन स्कूल ही नही जाओ, दिन भर शहर में ही घुमते रह जाओ और वहाँ पर मतलब गंगाजी हमारे यहाँ बहती है तो लड़के सब वहाँ लेकर चले गए चलो वहाँ स्नान करने वहीं घुमते-फिरते रह गए तो वहाँ जाकर पढ़ने का Interest खतम हो गया। High school, Inter से लेकर के High school तक तो ठीक था। जबकि इसका नतीजा यह हुआ कि Inter में फेल हो गए। जब फेल हो गए तब भाग के यहाँ आए फिर यहाँ आए तो दो भाई तो यहाँ रहते ही थे। एक हम भी रहने लगे। दोनो भाइयों के बीच ये था कि दोनो एक-दूसरे पर विश्वास करते थे। सबसे बड़ा जो था वह छोटा वाला को पैसे कमा-वमा के उसी को देता था, बीच में हम भी आ गए। यहाँ आए तो भाइयों ने कुछ दिन काम-धाम सीखाया। काम सीखने के बाद काम करने में Interest नहीं था काम करते कम थे घुमते ज्यादा थे। घर से निकल गये रोटी का डब्बा लेकर अपना घुम-घामकर शाम तक चले आए घर पर। अच्छा फिर बीच में भाइयों ने सोचा कि यह ज्यादे पढ़ा-लिखा है ऐसा करते है कि पैसा-वैसा इसी के पास रख देते है। यही अपना घर का भी देखता-वेखता रहेगा। हम जो पैसे को buy तो करे नही उस पैसे को हम इधर-उधर करें, फिल्म-विल्म देखें, खाऐ-पीये, अपना जो भी। भाइयों का भी पैसा था वो भी खतम कर देते थे। कुछ दिन ऐसे चलता गया। जैसे दो भाई काम करते थे तो दोनों 2 हजार भी एक की salary होगी तो 4000 रु० हो जाता, फिर हमारा भी वे जोड़ लेते थे

कि यह 2000 लाया होगा 6000 घर का हिसाब हम तो करते ही नही थे - भाइयों का पैसा मारते थे - जाते थे घुमते थे तो शुरुआत में साल भर तो ऐसे ही बदमाशी चलता रहा, फिर बीच में जो भी भाइयों का पैसा Balance बचता था कहते थे रख लो कोई घर में काम - जाम करेंगे। भाई ने अपनी हिसाब में छोड़ लिया कि महीने में 4000 दिया। अगले महीने में 4000 दिया, उससे अगले महीने में 4000 दिया। 12000 - 14000 जमा हो गए। वे जो भी दे वे हम खा - पीकर ; घुम - फिर कर बराबर कर जाए। चलता रहा सिलसिला कुछ दिन तक, बीच में यह हुआ कि भई घरपर अचानक कोई जरूरत पड़ गई घर पर कोई खेत Registry करानी थी तो यह हुआ कि भाई पैसे - वैसे जो है पड़ ही है इससे पास चलकर काम करते है। मेरे पास तो एक भी पैसे नही था। सारे पैसे घुम - करके खा - पी गया। न पैसे देते तो मारा - पिटी तो होती ही होती। मान लो कोई आदमी 10,000 - 12,000 इकट्ठा करके दे, बड़ी मेहनत करके दे और पैसे को आदमी इधर - उधर खर्च कर दे तो आदमी को गुस्सा तो होता ही है। हम यहाँ से बगैर बताए ही भाग चले गए।

प्रश्न→ कहाँ भाग चले ?

→ बताए भी नहीं और यहाँ से भागकर सीधे चले गए कलकत्ता, वहाँ पर हमारे जीजा रहते थे और उनके पास 2 - 1 महीना रहे। हालाँकि नौकरी चाकरी के ध्येय से नहीं वैसे ही घुमने के ध्येय से। वहाँ बोले कि चलो एकाध - महीने रहो फिर काम - धाम लगवा देगें। हम बोले काम - धाम नहीं करना है हमको। यदि काम करना होता तो वहाँ से छोड़ के क्यों आते। फिर वे भी लोग पूछने - लगे मतलब वहाँ से क्यो चले आए। वहाँ तो पता लगा

कि तुम काम-धाम सीख रहे थे सेटिंग ठीक थी। मैं वहाँ से ऐसे ही चला आया घूमने के लिए। फिर जब मैं बिना बताए चला आया तो भाइयों का खबर घर गया, इधर-उधर गया कि कहाँ चला गया, वहाँ भी गया खबर फिर वे तो यहाँ से काम-धाम छोड़के पैसा-वैसा लेकर के भाग गया। फिर जीजा बोले कि, तुम ऐसा करो कि तुम घर चले जाओ फिर घर से होकर वहाँ जाना। फिर वहाँ से घर चले गये। फिर भाई भी पहुँच गये घर पे, वहाँ लगे पुछने कि पैसे-वैसे क्या किया इतने। तो बता दिये बाद में हकीकत जो थी कि भाई काम-धाम किये नहीं ऐसे ही घुमते रहे। पैसा-वैसा जो भी था वह खर्च कर दिये-खा पी गए। फिर दुसरे चक्करो में उन्होने कहा कि, कोई बात नहीं चलो भाई ठीक थे उस Time फिर भी chance दिया। उन लोगों का उतना पैसा इधर-उधर करने के बाद भी। ठीक है कोई बात नहीं चलो दुबारा चलो। फिर दुबारा आए। फिर जब दुबारा दिल्ली आए तो पहले साथ-साथ काम किया एक साथ उस समय हमलोग Joint परिवार थे। फिर बीच में है जो एक भाई घर में रहता था एक भाई घर चला गया। घर पे पिताजी बुजुर्ग थे तब उनसे काम धाम होता नहीं था वे बोले तीन आदमी नौकरी करेगें तो एक आदमी घर पर भी होना चाहिए। तब वे चले गए घर पे। घर पर जाकर पिताजी को सहयोग देने लगा। हर ऐक सुविधा खेती की उसने घर पर पैसे-वैसे देकर सारी व्यवस्था कर दी गई। फिर उसका वहीं शादी सुदी हुई। फिर बीच वाले की शादी हुई। सबकी शादी हुई फिर हम जो है सबसे छोटे थे अब सब बड़ो की शादी

निपट गयी तब वे सोचते थे कि परिवार अलग किया जाए। फिर हमारे पिताजी बोले कि जब तुम दोनों की हो गयी तब इसके भी एक लड़के की शादी हो जाने दो फिर अपना अलग-अलग हो लेना। फिर पिछले साल हमारी शादी हुई उसके बाद से परिवार अपना जो है अलग हो गया। अब अलग होने के बाद से एक Noida में रहता है। उसके दो लड़के है। उनकी सेटिंग ठीक है क्योंकि उसका परिवार थोड़ा ठोस है और वह जो है नौकरी लगभग 30-32 साल से कर रहा है वो सबसे बड़ा है। तो उसकी सेटिंग ठीक है Noida में। पहले यही रहता था मोतीनगर मे एक फैक्ट्री थी स्कूटर की यहाँ से यह ट्रांसफर होकर वहाँ चली गई वहाँ तो वही भी गए उसको 10-15 साल हो गए। तो वह वहीं पर रहता है। उसके बच्चे-बच्चे यहाँ पर है। एक स्कूटर फैक्ट्री मे लगा है एक ट्रेक्टर फैक्ट्री मे लगा रखा है और एक घर पर पढ़ता था। इंटरमीडिएट का परीक्षा अभी दिया है। Result अभी नहीं निकला है लेकिन उसको भी अभी बुला लिया है वहीं काम धाम लगा रहा होगा। हालांकि पढ़ने में बढ़ा ठीक था वो। बीच वाला तो घर पर ही है उसको दो बच्चा है एक जो है B.A. करके यहाँ आया था काम के तलाश में अचानक काम की व्यवस्था नहीं हो पाई परसों गया है वापस और एक घर पर पढ़ता है। हमारे तीन लड़के है एक हाईस्कूल की परीक्षा दिया था एक को यहीं लाए थे पढ़ा था 2-3 साल फिर काम धाम की व्यवस्था गड़बड़ होने से मैंने उसको बोला तुम घर चले जाओ। अच्छा इधर पे जब तक family पास में नहीं हो तो बच्चो का पढ़ाई-लिखाई। हम Rury

जाते थे तो वह पढ़ के आके अकेले बोर हो जाता था। दिन भर अकेले, तो उसको बोले चलो ठीक है तुम भी चलकर घर पर ही पढ़ो। तब बड़े वाले के लिए सोचकर रखा है कि यहीं कहीं लाकर उसको काम-धाम सिखा दें क्योंकि उसका भी घर पर पढ़ने में Interest नहीं है कुछ लड़कों का ऐसा समाज मिल गया है कि वह पढ़ भी नहीं पाया तो अभी उसको भी बोला हूँ कि उसका भाई भी July में आने वाला था तो उसी के साथ उसको भी बुलाऊंगा।

प्रश्न → तो मदन जी अभी आप अपने पूरे दिन के Routine के बारे में बताइये। अभी आप सुबह से रात तक क्या करते है?

→ सुबह में तो यह है जी कि चाहे मौसम कोई भी हो चाहे गर्मी हो, जाड़ा हो, बरसात हो मेरी आदत है मैं 4 बजे जग जाता हूँ। कोई भी Season हो, 4 बजे जगने के बाद सबसे Main Problem जो है इस Boundary के अंदर वह लैट्रिंग की है जो। जो आदमी Late हो गया उसको 10-15 के पीछे जाके Line में लगाना पड़ता है। तो जगते भी विशेष करके इसी मकसद से है कि चलके सुबह जो होता है लोग जगते कम है लैट्रिंग जो है सो खाली होता है सबसे पहले जगने का Main मकसद लैट्रिंग वाला होता है जो खुली जगह मिल जाएगी Line में नहीं लगना पड़ेगा खाली रहता है, तो सबसे पहले उठके जो तब जाकरके अपना लैट्रिंग हो जाने के बाद से मर्जी किया तो खाना बना लिया नहीं तो थोड़ा सो भी लिया। Duty होता है 9 बजे और Time तो रहता ही है। लेकिन सुबह जगने का परपस यह होता था कि लैट्रिंग के लिए क्योंकि यह व्यवस्था यहाँ की बहुत खराब है। जो आदमी 7 बजे जागेगा उसे 10 आदमी के पीछे Line लगना पड़ता है 5 आदमी - 7 आदमी। तो सुबह उठके 4 बजे जाते हैं लैट्रिंग-वैट्रिंग फिर उसके बाद से आके मर्जी किया तो एक आदमी के खाने बनाने में कौन

Time लगता है कभी-कभी रोटी बना भी लेते है तो कभी-कभी ना Mood में आया तो आके सो गये फिर 7 बजे उठके अपना खाना-पीना बना के फिर खा पी के 9 बजे की Duty होती है, 8 बजे यहाँ से निकलते है। अच्छा Duty में भी कोई ये नहीं है काम धाम आजकल कोई विशेष है नहीं 9 बजे भी घर से निकलते है आधा घंटे वहाँ late जाए तो भी वहाँ कोई पूछने वाला नहीं है क्योंकि वहाँ भी जाके बैठना ही होता है कभी काम के काम आ गया तो कर दिये नहीं तो वहाँ भी बैठना ही होता है। तो इसलिए Duty का कोई यह भी नहीं है कि 9 ही बजे पहुँचो। 10 बजे पहुँच गये कभी 9 बजे पहुँच गये। जैसे आज था कि सोचे की कपड़ा-वपड़ा धोकरके 11-12 बजे चलेंगे। सो गये ही नहीं आज।

अच्छा फिर जो Duty पर जाने के बाद आदमी को 8 घंटे Duty करना ही है। चाहे जो 9 बजे आएगा 5 बजे आएगा जो 8 बजे जाएगा वह 4 बजे आएगा। फिर 4 बजे से आने के बाद आदमी जो है नहीं खाना-पीना बनाना बाकी यहाँ तो कोई ऐसी जगह तो है नहीं जो आदमी exercise करने जाए या घूमने जाए। कभी-कभी Mood में आया तो R.Mulim Patel Nagar चले गए थोड़ी देर हवा खाने के लिए। बाकी जैसे बीच में पड़ोसी भी आ गये तो अपना बैठकर तास-वास खेलने लगे। क्योंकि 5 से 9 बजे का Time 4 घंटे खाली ही रहता है। अब 4 घंटा आदमी खाना बनाएगा नहीं। फिर बैठकर अक्सर हमलोग यहाँ सीपी खेलते है। दो-चार आदमी इकट्ठे हो जाते है जैसे एकाध पड़ोसी आए तो बैठकर अपना सीप-छुप खेल लिए नहीं तो किसी दिन Mood में आया तो हवा खाने Patel Nagar के बगल में जो R.S है वहाँ चले गए। फिर वहाँ से आने के बाद सोते तो खैर हमलोग 11 बजे ही है। 11 तो बज ही

बज ही जाता है सोने में फिर इसके पहले यह है कि पड़ोस में 2-4 आदमी है तो बैठकर बात-बात किये अपना बीच में Paper सब पढ़-पुढ़ लिया थोड़ी देर और ज्यादे करके ताश-वाश खेलके Time Pass करते है बाकी तो कोई काम है नहीं और ज्यादातर शीप में ताश होता है चार आदमी इकट्ठा हुए अपना 2-1 घंटे खाने-खाना बनाने के बाद ताश खेले। फिर 9 बजे के आस-पास 5-7 आदमी बैठकर इकट्ठे खाना खाते है जैसे तीनो भाई हम हुए और 2 आदमी और है। तो 5-6 आदमी इकट्ठे बैठकर खा-पीकर अपना जो है हम तो बल्कि अकेले है तो उधर जाते भी नहीं है यहीं सो जाते है। इन्ही के पास में यहीं सो जाते है।

यही सब जो है तो छुट्टी के बाद दिन तो पहले तो यह होता था कि लोगों में Interest था, लोग चलकर फिल्म देख लेते थे। लेकिन आजकल तो Ticket इतनी महंगी हो गयी है कि कोई हॉल पर जाने का नाम नहीं लेता। अच्छा बीच में कुछ ऐसा चल रहा था कि T.V. पर भी दिन में 2 फिल्में आजाती थी। कभी 3 बजे आ जाती थी तो कभी 10 बजे भी आजाती थी, तो फिल्म देखने बाहर तो कम ही जाते थे। नहीं पहले बचपन में Interest था लेकिन अब तो बच्चे-उच्चे बड़े हो गए तब से जिम्मेवारी के हिसाब से फिल्म तो खैर हॉल पर देखना ही छोड़ दिये। और वैसे भी मुझे बैठकर T.V. देखने में हो घूमने के लिए खासकरके घूमने के लिए ज्यादे निकल जाते अच्छा घूमने में भी ज्यादा धार्मिक प्रवृति के आदमी मंदिर में जाते है जैसे यहाँ झण्डेवाला मंदिर हुआ। जब भी छुट्टी हुई लगभग हर छुट्टी में अक्सर चले जाते है यहाँ पर। एक झण्डेवाला मंदिर है करोलबाग में लोग इसको बड़ा विख्यात और विशाल मानते है। तो मंदिर में चले गए फिर

फिर उधर बंगला साहिब है उधर भी जाते - आते घुमते ही रहते है तो घुमने मे ज्यादातर मंदिरों मे ही Interest बाकी जो है और फिल्म का तो Interest नहीं रहा और छुट्टियों मे भी कुछ ऐसा ही है कि लोग आपस मे एकबार इक्ट्ठा नहीं हो पाते है। ऐरिया वाईज के हिसाब से होता है। कुछ लोग को शनिवार को होता है कुछ को रविवार को, कुछ को बुधवार की होती है। तो हरएक छुट्टी के दिन भी लोग इकट्ठा नहीं रहते है। अकेले ही आदमी रहा तो अकेले तब आदमी बोर हो जाता है तब निकल गए कहीं घुमने के लिए Park - बुर्के मे टहल लिए नहीं मंदिर तो हर छुट्टी को जाना होता ही है। सुबह गए अपना 2-3 घंटे वहाँ बैठे - बैठे फिर एक भाई रहता है Noida उसके पास निकल गए तो उसकी पूरी family रहती है तो फिर वहाँ गए तो रात भर वहीं रह जाते सुबह आ जाते है। तो हर छुट्टी के दिन नहीं जाते है। यहाँ और भी गाँव घर के सगे रिश्तेदार संबंधी लोग रहते है, कभी किसी के यहाँ चले जाते है, कभी किसी के यहाँ चले जाते है। यहाँ के जगह के यहाँ के लोगो के :

→ यहाँ भी लोग जो है कोई गाँव से ज्यादे सुधार यहाँ भी नहीं है क्योंकि यह कॉलोनी ऐसी है। अच्छा कॉलोनी ऐसी जहाँ U.P., Bihar के लोग इकट्ठा हो जाए तो यहाँ माहौल ऐसा हो ही जाता है। जैसे आप मोती नगर, पटेल नगर चले जाओ जहाँ आपको भी मतलब ये समाज के हिसाब से भी असर पड़ता है यहाँ पर सब लोग अपने ही तरफ के जैसे हमारे District का यहाँ पर कम से कम 10-15 घर है। एक घर में 5-6 आदमी

हमारे District के कम से कम 50-60 आदमी यहाँ से वहाँ तक मिला के है। पहले तो आपस में लोगों में बड़ा मेल था। कोई काम-प्रयोजन करना होता था तो सब लोग मिलजुल कर करते थे। लेकिन आजकल वो बात नहीं रही, सब जो है अपनी अभी बांकी 5-7 डबर है उनका group अलग है 4-5 आदमी का किसी का group अलग है। 2-3 आदियों का अलग ही है पहले था कि यहाँ बहुत एकता थी। लोग जो है कोई भी काम धाम करते थे, सब लोग मिलजुल कर आपस मे करते थे। लेकिन अब तो यह है कि सब जो है अपने-अपने में ही है कोई किसी से उसको देख के राजी नहीं तो कोई दुसरे को देखकर राजी नहीं। जैसे वो वाली बात है दुसरे के सुख को देखकर आजकल लोग जितना ही दुःखी है तो वही वाली बात है ज्यादातर लोग दुसरे का सुख नहीं देखना चाहते है ऐसे भी प्रवृति के लोग है।

प्रश्न- यहाँ कुछ पर्व त्योहार!

→ पर्व-त्योहार तो वैसे भी जगह रह न गयी लेकिन फिर भी हम लोग मनाते है। पर्व त्योवहार जैसे- जन्माष्टमी के दिन जो है 5 साल हो गये मतलब आपस मे चंदा-वंदा इकट्ठा करके और जन्माष्टमी के दिन यहीं पर कृष्ण भगवान की मूर्ति जैसे एक डबर पड़ी एक डबर है। 3-4 साल हो गये नहीं यह सातव साल है। यह जन्माष्टमी का पर्व तो लोग हमेशा ही मतलब सितंबर या अगस्त में पड़ता है तो यह पर्व तो मनाते ही है। किसी ने सहयोग दे दिया तो भी ठीक है नहीं तो अपने पास से करके यह सातवा साल है, ऐसे करके यह चल ही रहा है। तो यही पर्व मनाते है मना पाते है। लेकिन ये हर साल जन्माष्टमी मनाते है। कुछ जगह के अभाव से भी कोई

काम नहीं यहाँ पर संपन्न होता है कुछ लोगो में आपस में मिले भी नहीं है इसलिए भी नहीं होता। कुछ पहले लोग थे तो उनकी विचारधारा कुछ और भी तो उस Time तो होता था। पहले करते रहते थे अब लेकिन आजकल तो यह है जो कि सब लोग अपने-2 में मस्त है।

यही पर्व जन्माष्टमी वाला जो है सो मनते है। अब तक तो चलता आ रहा था लेकिन मेरे ख्याल से ये भी इस साल से बंद हो जाएगा। क्योंकि किसी को Interest है नहीं और एक ही आदमी के सहयोग से जो यह खर्च 1400-1500 बैठ ही जाता है तो यह एक आदमी तो कर नहीं पायेगा लेकिन अभी तक तो फिर भी चल रहा था लेकिन इस साल से लगरहा है कि बंद हो जायेगा।

प्रश्न→ तो अब दिल्ली में काफी फैक्ट्रियाँ बंद हुई है तो आपकी तरफ भी बंद हुई है तो उससे क्या असर पड़ा है?

→ हाँ हमारे Area से ही तो शुरु हुई है जैसे हमारा Area तो बसई है, सारे छोटे-छोटे कल-कारखाने है तो जब छोटे कारखाने बंद हो जाएँगे तो वो जैसे बाहर बड़ी कंपनियों में माल supply देते है। छोटे बंद हो जाएगा तो बड़ी को माल नहीं देंगे तो बड़ा भी बंद हो जाएगा। तो यह तो छोटे के बंद होने से ज्यादे फर्क बड़ो पर पड़ता है। क्योंकि छोटे वाले माल बना के बड़े वाले को देते है। छोटे वाले बड़े वाले को माल देंगे नहीं तो बड़े वाले की भी उनकी Routine खराब हो जाएगी। अब हमारे यहाँ ये आपका बसई हुआ काफी factory बंद हो गए, फिर श्रीनगर में जूते की कंपनी थी, हमारे पड़ोस मे ऐसे 50 लड़के बेकार हो गए जो इस जूते कंपनी में काम करते थे। बंद हो गई वे बेचारे अपना घर चले गए। फिर यह बसई में जो पंखा

लाइन मे था, तो यह पंखा लाईन में कोई प्रदूषण नहीं था। पहले सरकार का विचार था कि प्रदूषण को ही बंद करना लेकिन बीच में कुछ ऐसी भी धांधली हुई कि काफी बगैर प्रदूषण वाली भी कंपनी बंद हो गई। जैसे - बल्ब - वल्ब की हुई, नारायणा क्या नाम है मायापुरी के बगल में एक ये है अच्छा ही नाम है हमको याद नहीं आ रहा है - हमारे पड़ोस में ही है :- 'हरीनगर' हरीनगर में काफी Total कंपनियों जो है चाहे ...... जो हो कुछ तो लोगों ने बंद कर दिया दबाव में कुछ लोग डर के मारे बंद कर दिये कहीं सील न हो जाए तो हमारी मशीन उसमें रह जाएगी। जो न भी बंद होने वाली थी कुछ लोग ऐसे भी भाग गए। जब कंपनी बंद हो जाएगी काम नहीं रहेगा तो असर तो उसका लोगो के ऊपर पड़ेगा ही पड़ेगा। अच्छा हर एक कंपनी एक दुसरे से Joined है। छोटी वाली माल बड़े को देना बड़े वाले का माल उसको देना तो असर तो बड़े वाले पर पड़ा और छोटे वाले पर भी पड़ा। असर तो काफी पड़ा अब तो यह है सभी कंपनी चाहे बड़ी हो या छोटी किसी में काम धाम नहीं रह गया। अब जो यह राधेश्याम करता था वह A.C की कंपनी थी खुब दवा के Season इतना चलता था कि जिसका कोई हद हिसाब नहीं है एक घंटे का भी Time नहीं था तो फर्क तो पड़ ही गया है हर एक कंपनी में अब हमारे यहाँ था पीछे जो है Duty जाते थे 8 बजे तो 5 बजे तक Duty होती थी और 5 बजे से 11 बजे तक overtime करते थे। दो साल हो गया 1 घंटा overtime नहीं होता। overtime क्या Duty में दिन भर बैठ के आते है तो काम - धाम की Position तो लगभग खराब ही है जबसे यह सिलसिला शुरु हुआ तबसे खास कर जबसे सील

शुरू हुआ, तब से हालत और भी खराब हो गई है।

प्रश्न → तो यह सही है या गलत है सरकार का ?

→ नहीं सरकार तो जैसे मान लीजिए ये प्रदूषण के लिए बंद कर दी तो चलो ये बात तो ठीक है लेकिन जो प्रदूषण वाली है उसको बंद किये मानलो ये गाड़ियों - मोटर से भी प्रदूषण हो ही रहा है और बीच में सरकार ने ये किया तो वो भी तो कामयाब नहीं हुआ लेकिन सरकार बीच में कुछ गलत भी तो कि मानलीजिए काफी कंपनियाँ वैसे भी बंद हो गई और कुछ प्रदूषण से नहीं संबंधित भी कंपनी को बंद कर दिये लोग तो दिक्कत और हो गई, अब उसमें सरकार का क्या ये है उसमें क्या कहा जाए। लेकिन लोग इसमें काफी बेकारी तो हो ही गई इसमें बहुत लोग बेकार हो गए। हमारे अपने ही इलाके में 500 - 600 लोग बेकार हो गए। अब हमलोग की ये Planning थी कि पीछे के माहौल में जो हमारा ये land है हम बेचे तो कभी 50000 - 60000 रु० मिल जाते निकल जाते थे ये आदमी उम्मीद रखता था कि चलो नहीं नौकरी है तो अपनी जगह है कभी land में बेचेंगे तो अपना घर में कोई काम-धाम कर लेंगे। लेकिन अब तो यह माहौल हो गया है कि उस 60000 को किसी का 10,000 में देते है तो किसी को देते है तो कहता है क्या करेंगे हमारी नौकरी नहीं रह गई है। 10,000 भी देना मुश्किल है। क्या करेंगे जब इसको लेकर जब नौकरी ही नहीं रह गई तो इसमें तो और दिक्कत अभी हमलोगों को भी हो गई है कि जो भी पहले के बनवाने रखे है, पहले इस उम्मीद में बनाये थे कि चलो कभी इसको बेच देंगे तो घर पर जगह - जुगाड़ ले लेंगे। लेकिन इसके के वजह अब मजदूर वर्ग के जो

लोग है वे भी कैसे पड़े हैं तब तो रहे कि पीछे 60000 - 70000 में बेच सकते थे लेकिन अब तो कहो कि कोई 20000 - 30000 कम दे दे तो कोई राजी नहीं है कि हम क्या करेंगे लेकर जब हमारी नौकरी नहीं रही सब यही कहता है कि हमारा साल भर चलेगा कोई कहता है कि अगले साल में होगा। तो सबकी मतलब यही हिसाब किताब चल रहा है काम धंधे का। ये कि जितने भी बड़े लोग है छोटे की वजह से ही बड़े हुए है। मान लो जैसे हम ही लोग है factory में काम न करें Production न हो तो बड़े वालों का काम तो रुक जाएगा। वे तो यही सोच रहे कि मतलब कि छोटे वाले सिर्फ इसी मकसद से रह रहे है कि गंदगी फैलाने के लिए या झुग्गी झोपड़ी में रह रहे है ये निम्न वर्ग के। तो निम्न वर्ग के आदमियों का योगदान न हो सहयोग न हो तो बड़े वालो का भी काम धाम रुक जायेगा। और उनबड़े नहीं हो पाएगे मतलब जैसे वे कहते है कि ये गंदगी फैलाते है या बिजली की चोरी करते है आखिर बिजली का उत्पादन भी तो यही लोग करते है। और आजकल यदि U.P., Bihar का लोग न हो तो दिल्ली का सब काम-धाम बंद हो जाएगा। जितने बड़े लोग है इनके काम-धाम पर आश्रित है सबका काम धाम रुक जाएगा Total जो है U.P. और Bihar के ही लोग तो संभाल रखें है। छोटे से लेकर बड़े कामों में इन्हीं का तो ज्यादा योगदान रहता है। सरकार का यह सोचना यह बिलकुल गलत है कि निम्न वर्ग के लोग गंदगी फैलाते है ऐसी बात तो है नहीं। अब हमी लोग के खून पसीने से जो भी काम धाम हमलोग करते है यदि हमलोग काम करना बंद कर दे तो उनका

Progress बंद हो जाएगी ये तो सरकार का सोचना गलत है कि हमलोग गंदगी फैलाते है दिन भर मेहनत भी तो हमीलोग करते है। उसके बाद भी उचित मजदुरी नहीं मिलती और वह भी समय से नहीं मिलती है तो मजदुर वर्ग का तो चारों तरफ से शोषण तो हो ही रहा है, लेकिन सरकार इन बातों पर कहाँ ध्यान देती है। सारी दोष मजदुरों को देते है। बड़े लोग हुए चाहे सरकार हुई। पीछे कई सालों से Grade ग्रेड नहीं आ रहा और जो आ रहा है उसमें आधे फैक्ट्रिओं में लोग देने को राजी नहीं है। सरकार उनपर दबाव नहीं डालती है। अब यहाँ 2400 का Rate चल रहा है आप देखेंगे यहाँ 100 में से 20% ही ऐसे Factory है जो ये Rate देती है बांकि 1600-1700। यहाँ तक कि लोग 1200 पर काम करते है और लोग कर रहे हैं। मजबुरी में आदमी क्या करेगा जो मजदुर आदमी है जो घर-बार छोड़ कर चला आया तो यहाँ उसकी अपनी Property है नहीं तो जब तक कुछ करेगा नहीं तो खाएगा क्या। वह तो यह सोचता है कि चलो 1200 की भी नौकरी करेंगे तो खुराकी तो चलेगी। तो ये तो है यहाँ की परिस्थिति, जबकि सरकार इन सब चीजों से अवगत है लेकिन इनपर कोई ध्यान नहीं दिया है अभी तक Rate 2400 कुछ रुपए का है लेकिन यह बहुत कम जगहों पर मिलता है। सरकार को भी पता है। बांकी जो है कोई 1300-1400-1700 तक देता। जो चीज ध्यान देने की है उसपर ध्यान देगी नहीं सरकार तो यह कहेगी की निम्न वर्ग के है वे ऐसे कर रहे हैं वैसे कर रहे है, लेकिन ऐसी बात तो है नहीं यह सरकार की भूल है और छोटे लोग/वर्ग के लोग काम न करे तो बड़े वर्ग वाले जो भी है वे ऐसे ही रह जाएंगे लेकिन इतना करने के बाद भी

कोई निम्नवर्ग पर ध्यान नहीं देता है। चाहे सरकार हो या कंपनी के मालिक हो। यही तो परिस्थिति है।

प्रश्न→ जब आप सरकार का चुनाव करते है तो यहाँ लोग election मे vote किस आधार पर देते है।

→ अब कुछ लोग तो vote इस आधार पर देते है कि जैसे जिसने काम किया, यहाँ पानी की व्यवस्था करायी रोड की व्यवस्था बनाई चाहे कोई सुविधा दी तो कुछ लोग तो उनको देते है।

किसी का गैलन चुरा भी लेते है। पीछे हमारा था कि चार-चार, पाँच-पाँच गैलन चोरी हो गया लेकिन तेल मिला ही नही यहाँ तो तेल की तो बड़ा Problem होती है यहाँ राशन वाला तो हर दिन खोलता है।

प्रश्न→ खाना तेल पर ही बनाते है?

→ हाँ तेल पे ही बनाते है स्टोप मे।

शौक जो है सो only शौक तो कोई है नहीं।

प्रश्न कोई फिल्म नहीं देखते?

→ पहले देखते थे वो तो पहले बता दिया। अब तो घर की जिम्मेवारियों की वजह से कोई शौक रह नहीं गया। बच्चे-उच्चे बड़े हो गए दूसरे शौक हो भी जब आदमी की नौकरी-चाकरी कोई अच्छी होती है तो उस हिसाब से शौक रखता है। अब तो घरेलू झंझट है कि आदमी उसी बारे में नहीं सोच पाता है तो आदमी शौक क्या करे। 2-3 बच्चों की पढ़ाई लिखाई कॉपी-किताब फीस वही Maintain करने में हालत खराब हो जाती थी इसलिए कोई शौक तो रह नहीं गया। अब हो भी गए उम्र 40-42 की जो भी शौक था पीछे कर ही लिया अपना। अब बच्चे उच्चे बड़े हो गए और कुछ आर्थिक स्थिति काम-धाम की वजह से सही नहीं होने के वजह से Time ---

प्रश्न→ अपने कुछ भविष्य के बारे में बताइये कि क्या सोच रखा है बच्चों के लिए खुद के लिए?

→ महाराज नौकरी-चाकरी है नहीं तो भविष्य के बारे में क्या सोचा जाए और भविष्य में बच्चे भी जो है न मतलब काम लायक है नहीं। जो High school में पढ़ रहा था बड़ी मुश्किल से वह पास भी नहीं होगा। उसको 3 साल भी पढ़ा न बीच में Tuition किया था काफी Join किया था बीच में कहीं से खर्चा-खुर्ची भेजकर लेकिन मैं अपने-आप में Guess कर रहा हूँ कि वो मेरे ख्याल से 1 भी विषय में पास नहीं करेगा हालांकि पढ़ने में उसकी कोई बदमाशी नहीं है। पढ़ता रात-रात भर है लालटेन जलाके लेकिन नीचे उसकी नींव कमजोर थी उसको किसी ने पीछे शुपांइट नहीं किया अब जो भी पढ़ता है उसके दिमाग में घुसता नहीं है। सब सो जाएंगे लेकिन वो लालटेन जलाके पढ़ता रहेगा तो अब ये सोच रखे है कि उसके पढ़ाना ही नहीं है कॉपी-किताब हर एक चीज का जब नुकसान हो तो और आदमी के समझ में पढ़ाई न आए तो क्या फायदा पैसे ये करने से। तब उसी को कह रहे थे यहाँ बुलाने के लिए। पीछे जो छोटा वाला है वह थोड़ा पढ़ने मे यहाँ तो ठीक था अब वो घर गया तो वह भी लड़को के साथ घुमने मे, यहाँ रहता था तो T.V दिन भर देखता रहता था तो ज्यादा उसको फिल्म का ही शौक लगा रहता था घर भी नहीं चर्चा उसकी-उसकी लेकिन फिर भी वह पढ़ने में थोड़ा सा तेज है।

हर एक आदमी सोचता है कि अपने बच्चों के भविष्य के लिए घर-बार तो बनाना ही पड़ता है। और दुसरी बात ये कि यह माँ-बाप का फर्ज भी होता है। सोचते है लड़के है

कहीं न कहीं बनवा ही देंगे। लेकिन अपना भी तो फर्ज होता है। ~~सोचते है कि~~ लेकिन उनकी घरवाली समस्या तो हल करनी ही पड़ेगी पीछे आपको बताया था न कि परिवार हमारा ज्वॉइंट था एक ही घर मे तीनों भाई रहते थे लेकिन अब जो है परिवार का डिवाईजेशन हो गया है तो अब जगह भी कम हो गई है तो अब जगह की व्यवस्था भी करनी पड़ेगी पहले इकट्ठे ही थे अभी पूरे घर में से 3 हिस्सा हो गया गया है तो तीन हिस्से मे दो भाइयों का तो ठीक परिवार है तो उनका गाड़ी तो चल भी जाएगा लेकिन हमारी लिए तो और दिक्कत है वैसे ही 3-4 बच्चे है। तो 3-4 बच्चों के लिए 3-4 घर चाहिए। मियाँ-बिवी को अपने लिए चाहिए सोने-उठने बैठने के लिए तो हम तो और सोचते है कि कहीं न कहीं जगह लेकर घर बनवाए। अब हर वक्त कोशिश रहती है कि अलग-बगल कोई सस्ति जमीन हो तो उसे लेकर उसपर घर बनवाए। लेकिन जगह भी कम से कम 1 लाख रुपए बीघे की है। तो अभी मतलब 2-1 साल और निकल भी जाएगा क्योंकि अभी बच्चे छोटे है अभी कोई मतलब उतनी जरूरत भी नहीं है। अभी बटवार हुआ उसमें 2 घर मिला हुआ है अभी तो गाड़ी चल रही है लेकिन 2 साल के अंदर करना पड़ेगा। घर की व्यवस्था तो कहीं घर से बाहर थोड़ी दूर पर है जगह-जुगल लेकर के बनवाऐगे। वह भी जगह हमारे यहाँ 1 लाख-सवा लाख 1½ लाख तक की जमीन है तो कितनी भी महँगी हो तो रहने की व्यवस्था तो आदमी करेगा ही। 2-1 साल के अंदर करेंगे थोड़ा कंपनी-कंपनी से हिसाब किताब होगा थोड़ा पैसे-वैसे मिलेंगे तो उसमें घर की व्यवस्था करेंगे फिर

नौकरी - चाकरी की भी यही है। हम सोच रहे थे कि गाँव के पास एक थोड़ा सा चौराहा है मतलब शहर type का है शहर क्या चौराहा फिर भी ठीक है तो हम सोच रहे थे कि यहाँ से चलकर वहीं कुछ जगह लेकर दुकान - दुकान अपनी करेंगे यहाँ जब तक चल रहा, तब तक चल रहा है फिर यहाँ से छोड़ के तो वहीं अपना दुकान - दुकान करेंगे। अपनी चाहे एड.के की setting वहीं करेंगे।